कहानी एक तूफान की



बच्चों की कहानियाँ

रियाज आफन्दी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारी बात

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और ख़तरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

कहानी एक तूफान की

रियाज आफिन्दी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

र :

पराशर

मूल्य :

दो रुपये

मुद्रक :

अकील दीवानजी

ऑनलुकर प्रेस

१६, सासुन डॉक

कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली

मानद मंत्री

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग

बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०

मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५

शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१

२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२

सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५००००१

३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२

खजांची रोड, पटना-८००००४

माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८

१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६०००२

ब्लैकी हाऊस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१

के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००६

६३१-७, महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

कहानी एक तूफान की

नवंबर की १६ तारीख थी। दिन शुक्रवार का था। सरकारी तौर पर यह घोषणा की गयी थी कि बम्बई में एक बड़े तूफान के आने का भय है। यह घोषणा अखबारों में छपी, रेडियो से सुनायी गयी और दूरदर्शन से भी प्रसारित की गयी।

लोग दोपहर से ही अपने-अपने घरों में दुबककर बैठ गये। बाजार बन्द, दूकानें बन्द, दफ्तर बन्द, समझो कि पूरा शहर बन्द ! हर आदमी अपने-अपने ढंग से इस विपत्ति से बचने के लिए प्रार्थना कर रहा था। पता नहीं, ईश्वर ने किसकी विनती सुनी और बम्बई निवासियों के सिर से यह आपत्ति टल गयी। लोगों की जान-में-जान आयी, सबने सुख की सांस ली। नगर वैसा ही हो गया, जैसा पहले था। वही गहमा-गहमी, वही चहल-पहल, वही दौड़-धूप, वही सब कुछ, जैसे मुर्दे में दुबारा जान आ गयी हो।

दूसरे दिन, रात के खाने के बाद, हम सब कमरे में बैठे तूफान के बारे में बातें कर रहे थे। जितने मुंह, उतनी

बातें ! नानी छालियां कतर रही थीं और चुपचाप सब सुने जा रही थीं।

मगर कब तक सुनतीं ?

उनसे रहा न गया और अपने पोपले मुंह से बोल पड़ीं, " जब पाप बढ़ जाते हैं, लोग खुदा के फरमान का पालन करना छोड़ देते हैं, उस समय ऐसी ही कोई आफत आती है। देखते-ही-देखते सब कुछ नष्ट हो जाता है। जिस तरह नूह के तूफान ने सबको डुबाया, उसी प्रकार हम भी इस तूफान में डूब जाते, मगर खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि उसने हम सबको बचा लिया।"

मुन्ना, जो ऊंघ रहा था, 'नूह के तूफान' का नाम सुनकर चौंक उठा और बोला, "अब्बाजी, नानी ने यह कौन से तूफान का नाम लिया?"

पिताजी ने ऐनक ठीक करते हुए उत्तर दिया, "नूह का तूफान।"

मुन्ना उठ बैठा, "नानी ! नानी ! !, यह तूफान कब आया था ?"

नानी ने पानदान बन्द करते हुए कहा, " अरे बेटा, यह तो मैं भी नहीं बता सकती। परन्तु इतना अवश्य है कि यह तूफान आज से कई हजार वर्ष पहले आया था।"

" बाप रे बाप, हजारों वर्ष पहले ?," मुन्ना इतना कहकर चुप हो गया।

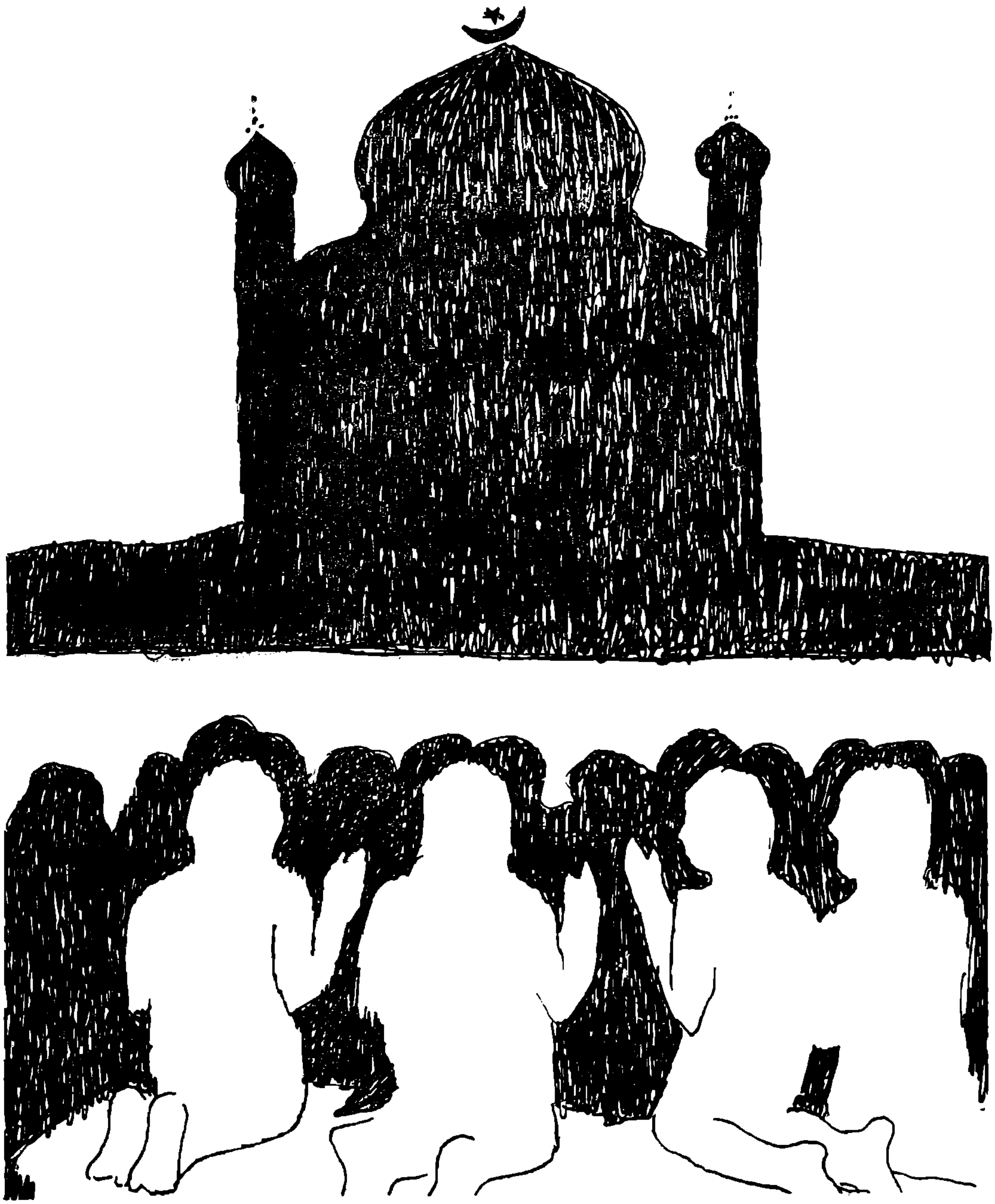
नानी से सोचा, चलो अच्छा हुआ चुप हो गया। जान तो छूटी। मगर कुछ ही पल के बाद उसने फिर पूछा, " नानी, यह हजारों वर्ष पहले की घटना आपने कहां पढ़ी ?"

" अरे बेटा, कहां पढ़ती ? मैं स्कूल थोड़े ही जाती थी। बस यहीं, घर में पैगम्बरों के, संत-साधुओं के किस्से सुने, पुस्तकें पढ़ीं। तनिक सूझ-बूझ आयी तब से कुरान अनुवाद के साथ पढ़ती हूं। इस तरह ये सब बातें मालूम हुईं। बेटा, लगन से सबकुछ है, लगन नहीं तो कुछ भी नहीं।"

" नानी, आप कितनी अच्छी हैं। कैसी प्यारी-प्यारी बातें करती हैं। हमें भी वह कहानी सुना दीजिए ना। वही, नूह के तूफान वाली," मुन्ना नानी से चिपट गया।

" हां-हां, सुना दो, हर्ज ही क्या है। अच्छे काम की लगन ऐसे ही पैदा होती है। जानकारी ऐसे ही मिलती है," पिताजी ने उकसाया।

" यह तो मैं जानती थी कि अब



" खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि उसने हम सबको बचा लिया। "

मुझको हजरत नूह की पूरी कहानी सुनानी पड़ेगी।"

"जरा एक मिनट, एक बात मैं भी बताता हूं," दादा बीच में बोल पड़े, "यों तो आज भी आप हजरत नूह के नाम से प्रसिद्ध हैं। कुरान में इसी नाम से आपका वर्णन हुआ है। परन्तु बाइबिल में, जिसका सम्बन्ध हजरत ईसा से है, उसमें आपका नाम यश्कर लिखा है।"

"दादा जान, यह बताइए कि फिर आपको नूह के नाम से क्यों पुकारा जाता है?," नन्हे ने प्रश्न किया।

"शाबाश, बहुत अच्छा सवाल पूछा तुमने," दादा जान खुश होकर बोले, "असल में बात यह है कि वर्षों तक अच्छी शिक्षा देने पर भी आपके यहां के लोग ठीक रास्ते पर नहीं चले। आपका बेटा भी आपकी आज्ञा का पालन नहीं करता था। इस कारण उन सबपर खुदा का प्रकोप आया। वह प्रकोप क्या था, यह तुमको नानी बतायेंगी। मैं यह बताना चाहता हूं कि उस प्रकोप में आपके यहां के सारे लोग मिट गये थे। इस बात पर आप इतना रोये कि शायद ही कोई दूसरा रोया हो। इसी कारण आप नूह के नाम से प्रसिद्ध हुए। यहां यह भी बता दूं कि नूह का अर्थ रोना-धोना होता है," इतना कहकर दादाजान फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगे।

"अच्छी बात बताई तुमने। मैं तुम लोगों जितनी पढ़ी-लिखी तो हूं नहीं कि सब बातें बताती चलूं। मैं तो सीधे-साधे ढंग से सारी कहानी सुनाती चलूंगी। हां, मगर बीच में इस तरह की कोई बात याद आये तो बताना। मेरी जानकारी भी बढ़ेगी।"

"अब्बाजान, आप एक बात बताना भूल गये", नन्हे के पिता को नानी के अंतिम वाक्य पर कुछ याद आया और उन्होंने दादा से कहा।

"वह क्या?", दादा चौंके।

"हजरत नूह बढ़ई का काम करते थे," नन्हे के पिता ने बताया।

"हां, यह बात तो मैं बताना ही भूल गया। अच्छा हुआ, तुमने याद दिला दिया," यह कहकर दादा ने बटुआ खोला, इलायची मुंह में रखी और बात को जारी रखा, "इस पर मुझे एक बात और याद आयी, वह भी बता दूं।

"एक दिन अलग-अलग पेशे के

लोग हजरत मुहम्मद की सेवा में आये और हर एक ने आपसे अपने भविष्य के पेशे के बारे में पूछा। जब बढ़ई की बारी आयी और उसने आपसे अपने पेशे के बारे में पूछा तो आपने कहा कि तुम परलोक में हजरत नूह के साथ होगे। हजरत मुहम्मद के इस कथन से भी यह बात ठीक मालूम होती है कि हजरत नूह बढ़ई का काम करते थे," यह कहकर दादा उठे, "मुझे नींद आ रही है। मैं जाकर सोता हूं। मुन्ने, अपनी नानी से पूरी कहानी सुनो। जो बातें रह जायेंगी, वह तुम्हारे अब्बा बता देंगे।"

नानी ने कहा, "तो, मैं क्या कह रही थी ?"

अम्मी ने उनको याद दिलाते हुए कहा, "आप बता रही थीं कि खुदा ने उन्हीं लोगों में से एक को पैगम्बर बनाया। उनका नाम हजरत नूह था।"

"हां, तो जब हजरत नूह पैगम्बर बने, उस समय उनकी आयु चालीस वर्ष की थी।"

"असल में आयु के बारे में लोगों की अलग-अलग राय है," पिताजी बोले, "कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि आप सौ वर्ष की आयु में पैगम्बर बने और कुछ लोग कहते हैं कि जिस समय आप पैगम्बर बने, उस समय आपकी आयु अढ़ाई सौ वर्ष थी।

"अढ़ाई सौ वर्ष ?," मुन्ने का मुंह अचरज से खुला-का-खुला रह गया।

"हां बेटे, इसमें हैरत की कोई बात नहीं। उस समय की कहानियों में इस तरह के कई उदाहरण मिलते हैं" पिताजी ने मुन्ने को समझाया।

नानी ने कहानी को आगे बढ़ाते हुए कहा, "परन्तु जब खुदा ने आपको पैगम्बर बनाया, तबसे आप रोजाना किसी ऊंची जगह खड़े होते और लोगों को आवाज देते। जब सबलोग आपके आसपास इकटठा हो जाते तब आप उनको समझाते कि देखो, तुम जो भी करते हो ठीक नहीं करते। खुदा ने मुझे इसलिए भेजा है कि मैं तुम सबको बुरे काम करने से रोकूं। तुम सबको बताऊं कि खुदा एक है। उसके अलावा कोई बन्दगी के लायक नहीं है। केवल एक खुदा की बन्दगी करो, उसी को मानो, जिसने यह संसार बनाया है और जिसने दुनिया की हर वस्तु बनायी है।"



" खुदा ने मुझे इसलिए भेजा है कि मैं तुम सबको बुरे काम करने से रोकूं ।"

आपकी बातें सुनकर लोग आपकी हंसी करते और कहते, "कल तक तो यह ऐसी बहकी-बहकी बातें नहीं करता था। अब इसको क्या हो गया है?"

कोई कहता यह पागल हो गया है, कोई कहता यह रास्ता भटक गया है। जितने मुंह उतनी बातें!

सबकी बातें सुनकर आप उत्तर देते, "भाइयो, न मैं पागल हुआ हूं और न रास्ता भूला हूं। मैं तो तुम ही लोगों में से एक हूं। मेरे खुदा ने, जो सारे संसार का स्वामी है और सारे संसार का पालनहार है, मुझको उसने तुम लोगों के पास भेजा है ताकि मैं तुमको उन सारी बुराइयों से बचाऊं, जिनमें तुम फंसे हुए हो।"

लेकिन लोग आपकी बातों को एक कान से सुनते और दूसरे कान से उड़ा देते। जब हजरत नूह लोगों को उपदेश देने खड़े होते तो लोग वहां से भाग जाते, अपने कानों में उंगलियां ठूंसते, मुंह छुपा लेते।

कभी-कभी लोगों को आपकी बातों पर बड़ा क्रोध होता। उस समय लोग मिलकर आपको मारते और इतना मारते कि आप बेदम हो जाते।

एक दिन लोगों ने आपको इतना मारा कि आप खून में नहा गये। एक बार लोगों ने आपके गले में रस्सी का फन्दा डाला और आपको दूर तव खीचंते हुए ले गए।"

नानी ने जरा रुककर कहा, "बोलते-बोलते गला सूख गया। बेटी, एक गिलास पानी पिला दे।"

अम्मी थोड़ी ही देर में पानी का गिलास ले आयीं। सबने पानी पिया और ताजादम हो गये।

नानी ने फिर कहानी आगे बढ़ायी, "हां, तो मैं यह बता रही थी कि लोगों के दिलों पर आपकी बातों का रत्तीभर प्रभाव नहीं पड़ा।"

"क्या किसी ने भी आपकी बात नहीं मानी?," मुन्ने का प्रश्न था।

"बात असल में यह है कि उनका दिल काले पत्थर जैसा हो चुका था। मगर फिर भी उनमें से चालीस पुरुष और चालीस औरतें ऐसी थीं जो हजरत नूह की बातों में श्रद्धा रखती थीं," पिता ने मुन्ने के प्रश्न का उत्तर दिया।

नानी ने फिर अपनी बात शुरू की, "जब लोगों के अत्याचार सहन न हो

सके और बुराइयां कम होने की जगह बढ़ने लगीं तो हजरत नूह ने अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाये और प्रार्थना की कि, "ऐ खुदा, तूने जिस काम के लिए मुझे संसार में भेजा था, मैं उसमें सफल न हो पाया। ये लोग मेरी एक नहीं सुनते और अच्छाइयों का रास्ता अपनाने की जगह, बुराइयां अपना रहे हैं। ऐ खुदा, अब तू ही इनको सच के रास्ते पर चला और संसार से बुराइयों का अन्त कर।"

खुदा ने हजरत नूह की विनती सुन ली और कहा, "ऐ नूह, हमने तुम्हारी पुकार सुन ली और तुमको और तुम्हारे माननेवालों को अपनी रक्षा में ले लिया है। अब तुम हमारे कहने के अनुसार एक नौका बनाओ। हम इस पूरे संसार को डुबोनेवाले हैं।"

खुदा का आदेश मिलते ही हजरत नूह ने आपने साथियों की मदद से नौका बनानी शुरू कर दी।

जब इन लोगों ने नौका बनानी शुरू की तो लोग इन पर हंसने लगे। उनका मजाक उड़ाने लगे। मगर नूह और उनके साथी चुपचाप अपने काम में जुटे हुए थे, क्योंकि वे जान गये थे कि अब इनका अंत निकट आ गया है। ये लोग अब कुछ दिनों के मेहमान हैं, इनके मुंह लगकर कोई लाभ नहीं।

थोड़े ही दिनों में खुदा के आदेशानुसार हजरत नूह ने एक बहुत बड़ी नौका बनाकर तैयार कर ली। यह नौका एक हजार गज लम्बी, चार सौ गज चौड़ी थी और इसमें सात मंजिलें थीं। तुम इससे अनुमान लगा सकते हो कि नौका कितनी बड़ी होगी। आगे जब कहानी सुनोगे तो तुम अचरज में पड़ जाओगे और उसकी लम्बाई-चौड़ाई-ऊंचाई के बारे में सोच भी नहीं सकोगे," नानी ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

"हां नानी, अब बताइये कि जब नौका तैयार हो गयी, फिर क्या हुआ?"

"हां, तो जब नौका तैयार हो गयी तो खुदा ने हजरत नूह को आदेश दिया कि पशु-पक्षियों और दूसरे जानवरों, यहांतक कि कुल जगत में से एक-एक जोड़े को नौका में सवार कराओ। आपने खुदा के आदेश से ऐसा ही किया। अब नौका में शेर और बकरी, चिड़िया और चील, कबूतर और बाज, हाथी



"खुदा ने हजरत नूह को आदेश दिया कि कुल जगत में से
एक-एक जोड़े को नौका में सवार कराओ।"

और चींटी सब साथ-साथ थे। देखो, इसको कहते हैं शेर और बकरी का एक घाट पर पानी पीना। यह केवल उस खुदा का छोटा-सा चमत्कार है, वरना आज तुम इतने सारे जानवरों को एक स्थान पर इकट्ठा करके बता सकते हो क्या ?

यहां पहुंचकर आदमी लाचार हो जाता है और खुदा की श्रेष्ठता को मानता है।

जब सब जानवर नौका में सवार हो गये तो आदेश हुआ कि उनके खाने-पीने का सामान नौका में रख दो।

आपने आदेश का पालन किया।

फिर खुदा का हुक्म हुआ कि अब तुममें से वे लोग नौका में सवार हों, जो धर्म पर चलते हैं। तुम्हारे घर और कुटुम्ब के भी वही लोग सवार हों, जो धर्म पर चलनेवाले हैं।

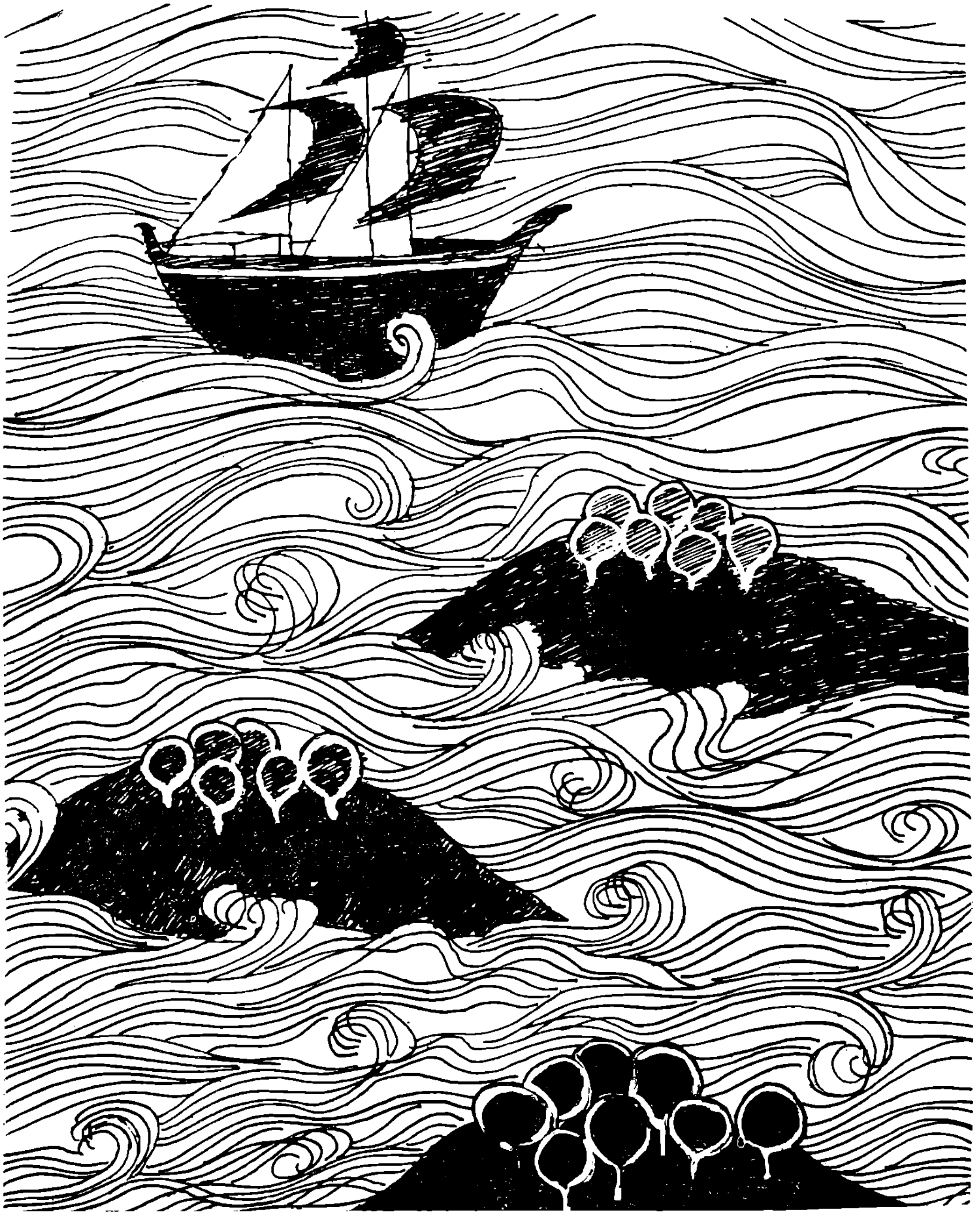
हजरत नूह के चार बेटे थे। एक का नाम साम, दूसरे का हाम, तीसरे का याफस और चौथे का कनआन था। इनमें से पहले तीन बेटे तो बाप के साथ थे, मगर सबसे छोटा कनआन शैतान था। वह दुश्मनों के साथ था। हजरत नूह पैगम्बर हुए तो क्या हुआ, आखिर एक बाप का हृदय रखते थे। कनआन के लिए आपने खुदा से विनती की, लेकिन खुदा ने विनती स्वीकार नहीं की। अंततः आपको अपने इस बेटे से हाथ धोना पड़ा।

याद रखो बेटे, खुदा के सामने सगे-संबंधी नहीं चलते और न कोई सिफारिश काम देती है। वह तो केवल अपने सेवकों का आज्ञा पालन देखता है।

जब सब प्रबन्ध हो गया, तब आकाश से मूसलाधार वर्षा होने लगी।

देखते-ही-देखते चारों ओर बाढ़ हो गयी। नदी-नाले उमड़ पड़े, तालाब छलक पड़े, समुद्र ठाठें मारने लगा। जिस ओर देखो पानी-ही-पानी दिखायी पड़ता। हर वस्तु पानी में डूबने लगी, बहने लगी। हर तरफ हाहाकार मचा हुआ था।

लोग अपने आपको बचाने के लिए पहाड़ों पर चढ़ गए, मगर पानी वहां तक भी पहुंच गया। हजरत नूह यह सबकुछ अपनी आंखों से देख रहे थे। उनका बेटा कनआन एक ऊंची चट्टान पर बैठा भींग रहा था।



" देखते-ही-देखते चारों ओर बाढ़ हो गयी । समुद्र ठाठें मारने लगा ।"

बाप ने उसको समझाया कि बेटा, अब भी समय है, पश्चाताप करो। खुदा पर भरोसा रखो। मैं तुमको नौका में सवार कर लेता हूं।

बेटे ने एक न सुनी और कहा, "आप मेरी चिन्ता न करें। मैं ऊंची-से-ऊंची चोटी पर चला जाऊंगा और अपने आपको बचा लूंगा। आप अपनी खैर मनाइए।" उसी समय एक बड़ी लहर आयी और कनआन को बहाकर ले गयी। आपने अपनी आंखों के सामने अपने अवज्ञाकारी बेटे को डूबते देखा। इसके बाद आपने नौका का दरवाजा, खिड़की सब बन्द करा दिए और अपने साथियों के साथ भीतर बैठ गये।

नौका के बाहर भारी तूफानी लहरें उठ रही थीं, वर्षा लगातार हो रही थी।

पानी ऊंचा होता जा रहा था और नौका भी उसके साथ-साथ ऊपर उठ रही थी। नौका के बाहर एक ऐसी तबाही मची हुई थी कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। परन्तु नौका के अन्दर जीवन पूरी तरह शान्त था।

कहा जाता है कि लगातार चालीस दिन मूसलाधार वर्षा होती रही। धरती से पानी के सोते उबले और पानी इतना ऊंचा हो गया कि वे पहाड़, जिनकी चोटियां आकाश से बातें करती थीं, इस तूफानी वर्षा में डूब गये।

अब तुम ही सोचो, ऐसे भयंकर तूफान से कौन बचा होगा ?

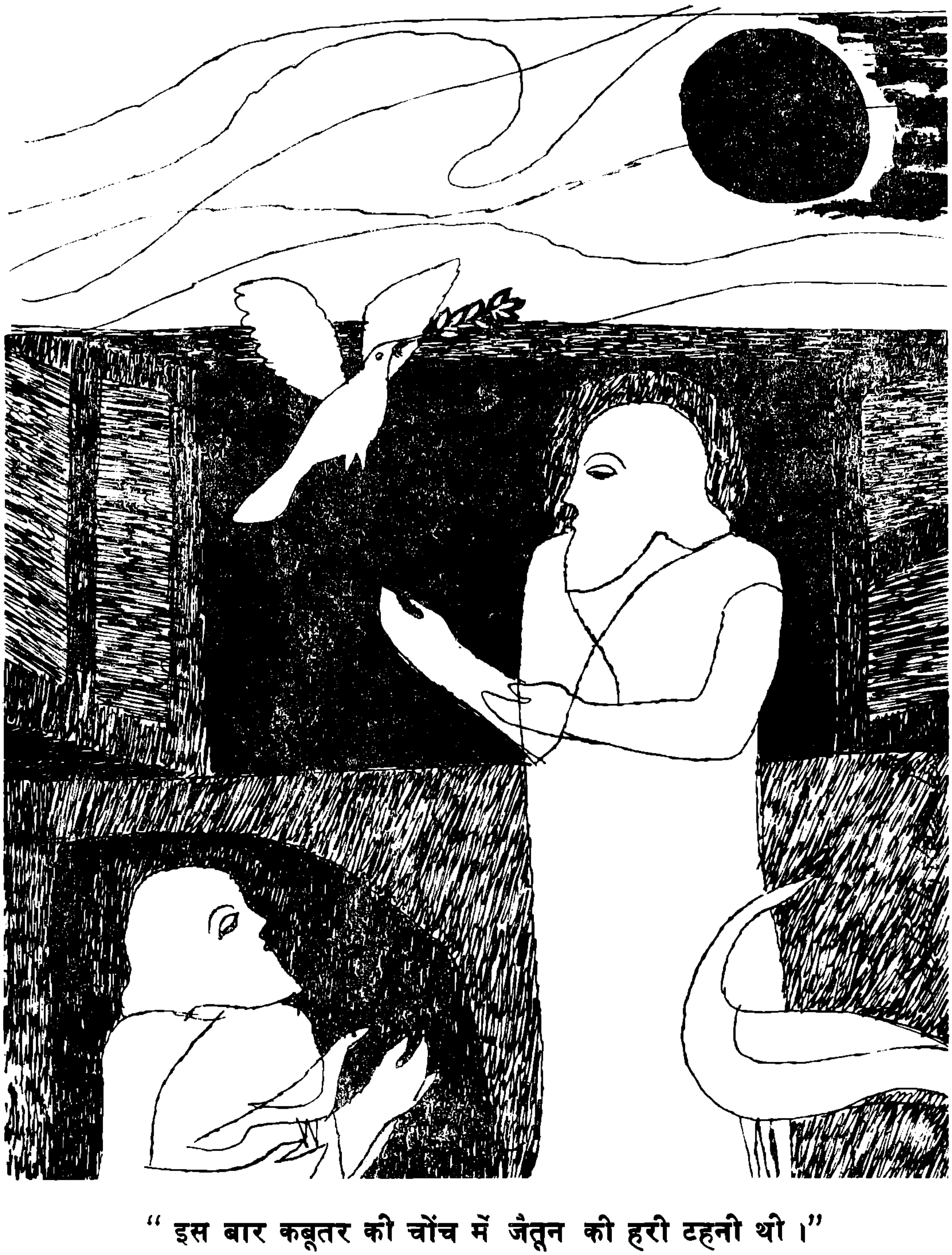
हजरत नूह की नौका चालीस दिन तक तूफानी लहरों के थपेड़े खाती हुई, एक अनजानी दिशा कि ओर बढ़ रही थी।

चालीस दिन पूरे होने के बाद, इकतालीसवें दिन आपने नौका की खिड़की खोली और एक कबूतर को बाहर की ओर उड़ने के लिए छोड़ दिया। कबूतर बहुत देर तक इधर-उधर उड़ता रहा, मगर उसे कहीं भी पंजे टिकाने की जगह नहीं मिली। चारों ओर पानी-ही-पानी था। वह वापस आ गया।

एक सप्ताह और इन सबने नौका में गुजारा।

सात दिन के बाद आपने कबूतर को फिर बाहर की दुनिया देखने के लिए रवाना किया।

इस बार कबूतर शाम के समय वापस आया। उसकी चोंच में जैतून की



" इस बार कबूतर की चोंच में जैतून की हरी टहनी थी ।"

: हरी टहनी थी। हजरत नूह समझ ा कि पानी कम होना आरम्भ हो गया । लेकिन आप नौका से बाहर नहीं ये।

एक सप्ताह और प्रतीक्षा के बाद पने तीसरी बार कबूतर उड़ाया। इस र कबूतर वापस नहीं आया। आप न गये कि अब धरती ऐसी हो गयी कि उस पर दुबारा आबाद हुआ जा कता है।

आपने नौका का दरवाजा खोला ार बाहर आये।

उस समय खुदा की ओर से आपको देश मिला कि ऐ नूह, अब नौका में से ल प्राणियों को निकलने के लिए कहो ार वे सब इस धरती पर फैल जायें कि यह उजड़ा संसार एक बार फिर ाबाद हो जाये। हमारी ओर से तुमको ार तुम्हारे साथियों को पूरी रक्षा ालेगी। हम तुमको सुखी रखेंगे।

खुदा का आदेश मिलते ही आपने सबको नौका से बाहर निकाला।

सब पशु-पक्षी एक-के-बाद-एक नौका से बाहर आये।

जिसका जिधर मन चाहा, उधर चल दिया।

जो लोग आपके साथ थे, उन्होंने नौका तोड़ी और उसके तख्तों से एक मस्जिद बनायी। मस्जिद के आसपास लोग आबाद हो गये। वह संसार, जिसको आदम और हव्वा ने बसाया था, तूफान के कारण नष्ट हो गया। परन्तु हजरत नूह की संतान, इसके अलावा आपके साथ जो चालीस-चालीस नर-नारी थे, और कुल संसार के दो-दो जोड़े थे, इन सबकी सहायता से यह उजड़ा संसार फिर आबाद हो गया।"

कहानी समाप्त हो गयी सब उठ गये। उठते हुए किसी ने जंभाई ली, किसी ने अंगड़ाई और अपने-अपने बिस्तर में सोने के लिए चले गये।

हमारे आगामी प्रकाशन

- कृष्ण का गोवर्द्धनधारण
- अचल आख्यान
- हक की रोटी
- श्वेतकेतु
- प्यारे नबी
- घास के मूसल
- द्रोण-द्रुपद
- बलि का बकरा
- हज़रत राबिया बसरी
- सेवा की राह

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी । इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके । वह भाषा है हिन्दुस्तानी ।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी दूसरी किस्त है । हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी ।



बच्चों की कहानियां
अंगुलिमाल
गिरिजाशंकर त्रिवेदी
भगीरथ
कृतज्ञ और कृतघ्न
प्रभु का प्रकाश
ब्रह्मा का गर्वहरण
निजामुद्दीन औलिया
युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
तीन साधु
एकमात्र विक्रेता
एस. चंद एंड कंपनी
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली – ११० ०५५